ओम् शान्ति दिनांक- 14-1-18 मधुबन

''82 वीं त्रिमूर्ति शिवजयन्ती महोत्सव पर सेवाओं के निमित्त विशेष सूचनायें''

परमप्यारे अव्यक्तमूर्त मात-पिता, बापदादा के अति स्नेही, सदा शिव भोलानाथ बाप की छत्रछाया में रह विश्व कल्याण की बेहद सेवाओं के उमंग-उत्साह में रहने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद के साथ त्रिमूर्ति शिव जयन्ती की बहुत-बहुत दिल से हार्दिक शुभ बधाईयां।

बाद समाचार - हम सबके अति प्रिय, सर्व मनुष्यात्माओं के गति-सद्गति दाता, विश्व कल्याणकारी शिव भोलानाथ बाबा की 82 वीं त्रिमूर्ति शिव जयन्ती का पावन त्योहार इस वर्ष 13 फरवरी 2018 को है, कुछ समय से प्यारे बापदादा की साकार मुरलियों में इस त्रिमूर्ति शिव जयन्ती के महान पर्व को खूब धूमधाम से मनाने की प्रेरणायें आ रही हैं। ऐसी मुरलियां सुनते जरूर आप सबके मन में भी बहुत अच्छे उमंग उत्साह के विचार आ रहे होंगे।

जैसे हर वर्ष सभी सेवाकेन्द्र कम से कम एक सप्ताह तक यह त्योहार मनाते हैं, बाबा के सभी बच्चे अपने-अपने घरों में, दफ्तरों में, दुकानों में, खेती आदि में शिवबाबा का झण्डा फहराते हैं। सेवाकेन्द्र को भी बाबा की झण्डियों वा बिजली की लड़ियों आदि से खूब सजाते हैं। इस अवसर पर शिव के मन्दिरों में प्रदर्शनी आदि भी आयोजित करते हैं। प्रभातफेरी भी निकालते हैं। परन्तु साकार में बाबा कहा करते कि बच्चे इस दिन शिव-मन्दिरों में जाकर शिव-भक्तों को पर्चे बाँटो जिनमें शिवबाबा के प्रति कुछ प्रश्न किये हों और साथ-साथ निमन्त्रण भी हो कि आकर समझो और नि:शुल्क सेवा से लाभ लो।

1) इस विचार से इस पत्र के साथ शिव भक्तों के लिए एक पत्र जिसमें कुछ प्रश्न लिखे गये हैं, उसे आप अपनी स्थानीय भाषा में छपवाकर शिव-मन्दिरों में बांट सकते हैं, इसमें थोड़ा कुछ परिवर्तन करना चाहें तो कर सकते हैं।
2) सार्वजनिक कार्यक्रमों में योगाभ्यास के लिए कम से कम 10 मिनट सामूहिक योग अवश्य रखा जाए। स्टेज पर कार्यक्रम के अनुसार सेवाकेन्द्र की कुछ तपस्वी समर्पित बहनें योग अभ्यास कराते हुए अपने शक्तिशाली प्रकम्पन्न द्वारा सुख शान्ति की गहन अनुभूति करायें।
3) अधिक से अधिक स्थानों पर शिव दर्शन प्रदर्शनी का भी आयोजन किया जाए।
4) मन्दिरों के पुजारियों व ट्रस्टीज़ के अलग-अलग स्नेह मिलन भी रख सकते हैं।
5) कुछ बड़े-बड़े होर्डिंग्स शहर के मुख्य स्थानों पर 15 दिन पहले लगाये जाएं ताकि हर एक शिव जयन्ति का महत्व समझ सके।
6) जहाँ सम्भव हो वहाँ युवाओं द्वारा ''शिव सन्देश यात्रायें'' स्कूलों के बच्चों को साथ मिलाकर निकालने से भी विशेष सबका ध्यान जायेगा और पर्चे भी अधिक संख्या में वितरित कर सकेंगे।
7) शहर के गणमान्य व्यक्तियों को आमन्त्रित करके उन्हें शिव बाबा का परिचय देते, शिवबाबा का ध्वज फहराया जाए, शिव ध्वज फहराने के पश्चात प्रतिज्ञायें भी कराई जाएं, जो नीचे लिख रहे हैं। ध्वजारोहण के पश्चात प्रसाद भी बाँटा जाए।
8) रेडिओ, टी.वी. इन्टरव्यूज़ और समाचार पत्रों में लेख के लिए पहले से ही मैटर दिये जायें। प्यारे बापदादा की प्रेरणा अनुसार समाचार पत्रों में पूरा एक पेज डाला जाए, **उसके लिए अंग्रेजी तथा हिन्दी में एक शिवरात्रि सन्देश का मैटर आपके पास भेज रहे हैं, इसे आप अपनी स्थानीय भाषा में अनुवाद करके अखबार में छपने के लिए दे सकते हैं।**
9) शिव जयन्ती से पहले प्रेस कान्फ्रेन्स भी रख सकते हैं, शिव जयन्ती के दिन समाचार पत्रों में एक ही साथ समाचार प्रकाशित हों या प्रेस नोट्स दिये जाएं ताकि सबको सन्देश मिल सके।
10) सभी स्थानों पर एक ही विषय पर प्रवचन रखे जायें और समाचार पत्रों के माध्यम से भी सभी को सूचना दी जाए, तो चारों ओर नाम बाला हो सकता है।

शिव-भक्तों के प्रति स्नेह-सम्पन्न पत्र

ओम् नमः शिवाय

परमपिता शिव की प्रिय सन्तान,

प्रिय आत्मन्!

आपकी परमपिता शिव से अनन्य प्रीत है और आप उनसे आत्म-मिलन अथवा मनोमिलन के आकांक्षी हैं। आपकी उनके प्रति भक्ति एवं श्रद्धा तो है परन्तु क्या आप अपने परम श्रद्धेय अथवा परम पूज्य परमपिता के प्रति निम्नलिखित आवश्यक बातें जानते हैं? -

1) शिव और शंकर में क्या अन्तर है? शिवलिंग अथवा ज्योतिर्लिंग किस अव्यक्त स्वरूप की प्रतिमा है? शिव को 'त्रिमूर्ति', **'त्रयम्बकेश्वर',** 'देवदेव' किस अर्थ में कहा जाता है?
2) शिव का धाम अथवा लोक कहाँ और कैसा है?
3) शिव की प्रतिमा पर तीन रेखाएं और एक बिन्दु किस बात के संकेतक अथवा चिन्ह हैं?
4) मनुष्य चोले में आत्मा का क्या स्वरूप है और परमात्मा शिव से उसका क्या अनादि-अविनाशी सम्बन्ध है?
5) आत्मा शिव-मिलन कैसे मना सकती है? ईश्वरानुभूति करने की सहज सुलभ विधि क्या है?
6) शिव को आत्मा का माता-पिता, सद्गुरू, परमशिक्षक, सखा, सहायक किस अर्थ और संदर्भ में कहा गया है? जबकि शिव परमपिता हैं, तब उनसे हमें क्या विरासत अथवा जन्म-सिद्ध अधिकार प्राप्त हो सकता है? शिव को 'माता' और 'पिता' दोनों सम्बन्धों से क्यों याद किया जाता है?
7) ''शिव के भण्डारे भरपूर, काल-कण्टक दूर'' अथवा ''शिव भोले भण्डारी एवं अवढर दानी'' - ऐसा कहा गया है। तब प्रश्न उठता है कि काल-कण्टक कैसे दूर हों और हमारे भण्डारे कैसे भरपूर हों?
8) शिव-पिण्डी पर कलश से जो बूँद-बूँद जल चढ़ाया जाता है, उसका क्या भावार्थ है?
9) शिव के आगे जो नन्दीगण बैल दिखाया जाता है, वह किसका प्रतीक है?
10) शिव पर बेल-पत्र या अक क्यों चढ़ाया जाता है?
11) शिवरात्रि 'रात्रि' ही को क्यों मनाई जाती है? जागरण क्यों किया जाता है? व्रत क्यों रखा जाता है? शिवरात्रि मनाने का ठीक तरीका क्या है?
12) शिव परमधाम, निर्वाणधाम, शिव लोक अथवा परलोक से कब अवतरित होते हैं और आत्माओं को किस विधि से मुक्ति और जीवनमुक्ति प्रदान करते हैं?
13) क्या आप मुक्ति, जीवनमुक्ति के इच्छुक हैं? उस इच्छा को पूर्ण करने के लिये क्या उपाय है?
14) क्या आप जानना चाहते हैं कि इस समय शिव कहाँ हैं और क्या कर रहे हैं?
15) क्या आप जानते हैं कि वर्तमान समय में पर्यावरण प्रदूषण, आणविक अस्त्रों-शस्त्रों के संग्रह, जन-संख्या में अति वृद्धि, नैतिक मूल्यों में ह्रास और चारित्रिक गिरावट किस स्थिति अथवा संकट का सूचक है और इनका भावी परिणाम क्या होगा और आपको किस महान् स्थिति की अविलम्ब प्राप्ति के लिये क्या करना चाहिये?

उपरोक्त सभी बातों को समझने तथा अनुभव करने के लिए आपको हमारा स्नेह-सम्पन्न निमन्त्रण है, इसके लिये कोई चन्दा या शुल्क नहीं है।

आपकी रूहानी बहनें तथा रूहानी भाई
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

स्थानीय पता:

नोट:- 1. इस पत्र के साथ शिव सन्देश वा शिव शंकर के अन्तर की छोटी पुस्तिका भी दी जाए ताकि उन्हें शिव परमात्मा के बारे में पूर्ण जानकारी हो और प्रश्नों के उत्तर भी मिल सकें।

शिव जयन्ती का आध्यात्मिक रहस्य (अव्यक्त महावाक्य)

* शिवजयन्ती महाज्योति बाप और ज्योतिबिन्दु बच्चों के मिलन का यादगार पर्व है। इस दिन भक्त शिव पर जल अथवा दूध चढ़ाते हैं और जल चढ़ाने समय बीच में ब्राह्मण होते हैं। यह प्रतिज्ञा की निशानी है। तो तुम्हारे पास जब भी कोई आते हैं तो उन्हों से पहले प्रतिज्ञा का जल लो अर्थात् प्रतिज्ञा कराओ कि हम आज से एक शिवबाबा के ही बनकर रहेंगे।

* शिवरात्रि पर्व बलि चढ़ने का भी यादगार है - यादगार रूप में तो स्थूल बलि चढ़ाते हैं लेकिन होना है मन, बुद्धि और सम्बन्ध से समर्पित। बलि चढ़ना अर्थात् महाबलवान बनना। आप बच्चों को अपने कमजोरियों की बलि चढ़ानी है। सबसे बड़ी कमजोरी देह-अभिमान की है। देह-अभिमान के वंश को समर्पित करना ही बलि चढ़ना है। तो अब ऐसी शिवरात्रि मनाओ।

* शिवरात्रि पर्व पर परमात्म प्यार में व्रत भी रखते हैं। यह व्रत खुशी की भी निशानी है। व्रत रखना अर्थात् प्यार में त्याग भावना। तो शिवरात्रि पर अपनी श्रेष्ठ वृत्ति द्वारा यह व्रत लो कि सदा कमजोर वृत्ति को मिटाकर शुभ और श्रेष्ठ वृत्ति धारण करेंगे। वृत्ति से कृति का कनेक्शन है। कोई भी अच्छी वा बुरी बात पहले वृत्ति में धारण होती है फिर वाणी और कर्म में आती है। तो श्रेष्ठ वृत्ति का व्रत धारण करना ही सच्ची शिवरात्रि मनाना है।

* शिव रात्रि के दिन भक्त आत्माओं के पास शिव बाप के बिन्दू रूप की विशेष स्मृति रहती है। शिव जयन्ती वा शिवरात्रि कोई साकार रूप का यादगार नहीं है लेकिन निराकार बाप ज्योति बिन्दू का यादगार है, जिसे वे शिवलिंग के रूप में पूजते हैं। तो आप सभी के दिल में भी बाप के बिन्दु रूप की स्मृति सदा रहे। बिन्दू अर्थात् बीजरूप स्थिति में स्थित हो बीज डालो तो अनेक आत्माओं में बाप की वा समय की पहचान का बीज पड़ जायेगा।

* शिवरात्रि का दिन भोलानाथ बाप का दिन है। भोलानाथ अर्थात् बिना हिसाब के अनगिनत देने वाला। नॉलेजफुल होते भी भोला है। वैसे तो हिसाब करने में एक-एक संकल्प का भी हिसाब जान सकते हैं लेकिन जानते हुए भी देने में भोलानाथ है इसलिए सिर्फ सच्ची दिल से उसे राज़ी कर लो तो सब भण्डारे 21 जन्मों के लिए भरपूर कर देगा।

* जैसे शिवरात्रि के दिन भक्त लोग अपने भक्ति की मस्ती में मस्त हो जाते हैं। ऐसे आप बच्चे ''पा लिया'' इसी खुशी में सदा गाते-नाचते उमंग-उत्साह से यह यादगार मनाओ। आप अभी इस ब्राह्मण जीवन में बाप के साथ सर्व आत्माओं को सुख, शान्ति, खुशी और शक्ति का सहयोग दो तब दोनों की साथ-साथ पूजा होगी।

* शिवरात्रि का अर्थ है - अंधकार मिटाकर प्रकाश देने वाली रात्रि। शिव रात्रि मनाना अर्थात् ज्ञान सूर्य का प्रगट होना। तो आप बच्चे भी मास्टर ज्ञान सूर्य बन विश्व से अंधकार को मिटाकर रोशनी देने का कर्तव्य करो। अंधकार मिटाने वाली आत्माओं के पास अंधकार रह नहीं सकता। अगर किसी भी विकार का अंश है तो उसे अंधकार कहेंगे, रोशनी नहीं। रोशनी अर्थात् सम्पूर्ण पवित्रता।

* शिवजयन्ती पर आप बच्चे प्रतिज्ञा भी करते और झण्डा भी लहराते हो। प्रतिज्ञा का अर्थ है कि जान चली जाए लेकिन प्रतिज्ञा न जाए। कुछ भी त्याग करना पड़े, कुछ भी सुनना पड़े लेकिन प्रतिज्ञा न जाए। वचन अर्थात् वचन। तो ऐसे मन से प्रतिज्ञा करना अर्थात् मन को मनमनाभव बनाना। साथ-साथ हर आत्मा के दिल पर बाप की प्रत्यक्षता का झण्डा लहराओ – यही सच्ची-सच्ची शिवरात्रि मनाओ।

प्रतिज्ञायें

82 वीं त्रिमूर्ति शिव जयन्ती पर शिवबाबा का ध्वज फहराते समय सभी संकल्प करें:-

1- एक ''पास'' शब्द की स्मृति से, जो कुछ बीता उसे पास करके, बापदादा के पास (समीप) रहेंगे और हर परीक्षा में फुल पास होकर विजयी बनकर दिखायेंगे।

2- मधुर बोल और व्यवहार द्वारा मिलनसार बन आपस में संस्कार मिलन की रास करेंगे।

3- सर्वगुण और विशेषताओं को जीवन में धारण कर, धारणा स्वरूप का साक्षात्कार करायेंगे।

4- अपने हर संकल्प, श्वांस, समय और शक्ति रूपी खजाने को सफल कर सफलता स्वरूप बनेंगे।

5- हर बीती को सेकण्ड में फुलस्टाप लगाकर सदा अतीन्द्रिय सुखमय जीवन का अनुभव करेंगे।

6- परिवर्तन की शक्ति से हर निगेटिव संकल्प, निगेटिव चलन को पॉजिटिव में चेंज करेंगे।

7- अलबेलेपन को समाप्त कर ब्रह्मा बाप समान सदा निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी स्थिति बनायेंगे।

ओम् शान्ति – ओम् शान्ति – ओम् शान्ति।

शिवरात्रि सन्देश

वर्तमान समय हर एक का जीवन अत्याधिक चुनौतीपूर्ण और तनावयुक्त बन गया है। आजकल पहले से कई गुना अधिक लोग अपने भविष्य के बारे में असुरक्षित और उत्तेजित हो गये हैं। जैसे-जैसे मनुष्य पहाड़ जैसी परिस्थितियों का समाधान ढूंढने का संघर्ष कर रहा है, वैसे वैसे दिनप्रतिदिन उत्पन्न हो रही परिस्थितियों और संकटों से निपटने की शक्ति बढ़ाने की आवश्यकता और बुद्धिमता महसूस हो रही है। शास्त्रों में कहा गया है कि परमात्मा का अवतरण ऐसे समय पर होता है जब विश्व में अत्याधिक नैतिकता का पतन होता है। भगवद् गीता में एक बहुत प्रसिद्ध श्लोक है,

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

दिनप्रतिदिन विश्व की बिगड़ती हुई परिस्थितियों को देखते हुए हम सम्पूर्ण विश्व में परिवर्तन के लिए परमात्मा के द्वारा दिये जाने वाले ज्ञान की आवश्यकता और समय के पहचान की सराहना करें।

महाशिवरात्रि अथवा शिवजयन्ती सभी त्योहारों में विशेष त्योहार है क्योंकि यह त्योहार स्वयं सर्वशक्तिमान श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ परमात्मा शिव के इस मनुष्य सृष्टि पर अवतरित होकर मनुष्य आत्माओं को उनके पाप कर्म और दु:खों से मुक्त कर फिर से इस धरती पर स्वर्ग अथवा सतयुग स्थापन करने का यादगार है। शिवरात्रि का गहन आध्यात्मिक रहस्य है कि इस धरती पर काली अंधियारी रात के समय पर जब सम्पूर्ण विश्व के हालात बहुत नाजुक और दयनीय हो जाते हैं तब परमात्मा का अवतरण होता है। निराकार परमात्मा शिव अनादि और अविनाशी है। शिवलिंग की प्रतिमा से परमात्मा के निराकार स्वरूप का बोध होता है। यह परमात्मा के ज्योति स्वरूप का प्रतीक है, जोकि परमात्मा के बारे में अन्य अनेक धर्मों की मान्यता के साथ बिल्कुल मिलता-जुलता है इसीलिए भारत के 12 प्रसिद्ध शिव के मंदिरों को ज्योर्तिलिगंम् मठ कहा जाता है। यह परमात्मा के प्रकाश स्वरूप होने का सूचक है। हरेक प्रार्थना स्थलों पर ऊंचाई पर टंगे हुए अखण्ड जलती हुई ज्योति, चर्च में लैम्प का जलाना, इजिप्ट की संस्कृति में परमात्मा के लिए लाइट का चित्र दिखाना, बैबेलोनियन संस्कृति, ध्रुण (इण्लैण्ड के पुरातन जाति के पुरोहित), नारवेजियन समाज आदि-आदि में उसे दिव्य प्रकाश के रूप में दिखलाना एक परमात्मा के निराकार और सर्वश्रेष्ठ होने की मान्यता का समर्थन करता है।

शिव शब्द का शाब्दिक अर्थ है कल्याणकारी अथवा सर्व का सदा भला करने वाला। परमपिता परमात्मा शिव अपने तीन दिव्य कर्तव्य स्थापना, पालना और पुरानी पतित विकारी दुनिया का नाश कर नई दुनिया की स्थापना द्वारा मनुष्य सृष्टि पर रहने वाली आत्माओं का कल्याण करते है अर्थात् सभी मनुष्य आत्माओं को मुक्ति और जीवनमुक्ति देते हैं।

शिवरात्रि पर लोग उपवास करते हैं और उस उपवास का अर्थ है, विकारी वृत्तियों से, विकारों से ऊपर उठकर हम ऊपर में वास करने वाले परमात्मा के साथ का अनुभव करें। जागरण का सही अर्थ है जगना या जागृत होना अर्थात् आध्यात्मिक अज्ञान की नींद से जागना और अपने आपको बुराईयों के प्रभाव और विकारों के प्रभाव से बचाना अर्थात् काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकारआदि से स्वयं को मुक्त करना।

एक बहुत बड़ी खुशखबरी यह है कि इस धरा पर परमात्मा का अवतरण हो चुका है और वह इस धरती पर शान्ति, पवित्रता और सम्पन्नता की दिव्य संस्कृति की स्थापना कर रहे हैं। राजयोग की सर्वश्रेष्ठ शिक्षा के माध्यम से परमपिता परमात्मा शिव इस समय इस धरती पर क्रांतिकारी परिवर्तन ला रहे हैं। इस तरह से शिवरात्रि नये समय चक्र के प्रारम्भ का यादगार स्वरूप है, जब सारी दुनिया कलियुग अथवा आयरन एज से गोल्डन एज सतयुग की ओर बढ़ रही है। अब नकारात्मकता रास्ता छोड़ सकारात्मकता को स्थान दे रही है। आज जब भ्रष्टाचार, पापाचार और अनिश्चितता ने सम्पूर्ण विश्व पर अधिकार जमा लिया है, जब नैतिक और चारित्रक मूल्यों का महान पतन हो चुका है, ऐसे समय पर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय निराकार परमपिता परमात्मा शिव के 1936 में प्रजापिता ब्रह्मा के साकार माध्यम में अवतरित होने की 82वीं जयन्ती मना रहा है।

तो आईए इस शिवरात्रि पर परमात्मा शिव के वरदान और दुआओं से अपने व्यक्तिगत जीवन की झोली भर लें। सही अर्थ में शिवरात्रि मनाना अर्थात् अपनी नकारात्मकता को नाश कर सकारात्मक और पवित्र वृत्ति को अपने जीवन में धारण कर उस परमात्म प्रज्ञा और दिव्य गुणों से सम्पन्न बनाना।

Shivaratri Message

Life today has become very challenging and stressful. More than ever before people are insecure and anxious about their future. As humans struggle to find solutions to the mounting problems, it is evident that we need a higher wisdom and power to deal with the emerging crises.

It is said in the scriptures that God comes at the time of extreme moral degradation. There is a very famous shloka in Bhagavad Gita: "yada yada hi dharmasya glanirbhawati bharat, abhyuthannam adharmasya tadatmanam srijamyaham". Looking at the deteriorating condition of the world, we can easily appreciate that "THE TIME" has come when God's intervention is necessary to bring about a transformation in this world.

Mahashivaratri or Shiva Jayanti is the most significant of all festivals for it marks the descent of the Highest on High God Shiva in the human world to liberate human souls from sin and suffering and re-establish heaven or Satyuga on earth. The deep spiritual meaning of Shivaratri is that God descends on earth at the time of extreme darkness (ratri) when the condition of the world becomes critical.

God is incorporeal and immutable. The Shiva lingam denotes the incorporeal form of God Shiva. It signifies the form of God as a point of light, which is very similar to the description of God across many other faiths. This is why the twelve well-known Shiva temples in India are also known as Jyotirlingam Math signifying his form of Light. The eternal light that hangs above the ark in every synagogue, altar lamps in churches, and light symbols associated with Egyptian, Babylonian, Druid, and Norse gods corroborates to the widespread belief in the divine light as the image of one, incorporeal, Supreme Being.

The literal meaning of the word Shiva is benefactor or one who does well to all. Supreme Soul Shiva brings benefit to all souls by performing the divine functions of creating and sustaining a new pure world and destroying all vices and evil from the old impure world, i.e., He gives liberation and salvation to all human beings.

The true fasting (upvaas) on Shivaratri is that we abstain from vicious thoughts and stay in His Company. The true Jagran or awakening means to awaken from the slumber of spiritual ignorance and to protect the self from the evil influence of vices such as lust, anger, greed, ego and attachment.

The good news is that God has already arrived on this earth to establish one divine culture of peace, purity, love, and prosperity. He is in the process of bringing a revolutionary change in this world through His elevated teachings in the form of Raja Yoga. Shivaratri thus commemorates a momentous occasion, marking the beginning of a new cycle of time, when the world passes from the Iron Age or Kaliyug into the Golden Age or Satyug, when the negative give way to the positive.

Today, when corruption, unrighteousness and immorality have spread all over the world, when ethical and moral values have declined drastically, the Prajapita Brahma Kumaris Ishwariya Vishwa Vidyalaya is celebrating the 82nd Shivaratri commemorating the year when Godly revelations first came through the human medium Prajapita Brahma in 1936.

Let us celebrate this Shivaratri and experience the blessings and benevolence of God Shiva by carrying out in our personal life what Shivaratri commemorates that is, destroying negative ways of thinking and nurturing a pure and positive attitude to illuminate our lives with God's wisdom and divine virtues.

*** Om Shanti ***

लेख

विश्व को एक सूत्र में पिरोने का पर्व है शिवरात्रि

आज हम 21वीं सदी के शैशवकाल व विज्ञान के युग में अनेक भौतिक सुखों का आनंद तो ले रहे हैं किंतु जिन आंतरिक सुखों की अंतरात्मा अनुभूति करना चाहती है वह उसे प्राप्त करवाने में सक्षम नहीं है। मानव जीवन में आज व्यक्तिगत खुशी, आनंद व उमंग के जन्म, सफलता व व्यवसायिक उन्नति आदि से संबंधित बहुत ही कम अवसर रह गए हैं जबकि सार्वजनिक, सामाजिक व संगठित रूप से खुशियों के आदान-प्रदान, स्नेह, सद्भावना को सुदृढ़ करने व अलौकिक आनंद से अभीभूत होने के अवसर तो नगण्य होते जा रहे हैं। इसी कारण मानव एकांकी परिवार, व्यवसायिक दायरे के भीतर सिमट कर तनाव, चिंता व जीर्ण-शीर्ण विचारों से जूझता जिंदगी के बोझिल सफर को काटने के लिए मजबूर है। उत्सव वास्तव में उसके जीवन में एक नई स्फूर्ति, जिज्ञासा, ताजगी, उमंग-उत्साह व अतीन्द्रिय सुखों की छटा बिखर ने के लिए प्रारंभ हुए थे तब उनमें श्रद्धा, प्रेम व सद्भावना थी, अब धीरे-धीरे श्रद्धा व प्रेम खत्म हो चुका है, अब रह गई है केवल परंपरा। अब उनकी लोकप्रियता, मौलिकता, सरोकारिता व उमंग उत्साह प्राय: खत्म होती जा रही है, इसका मूल कारण उन उत्सवों की वास्तविक आध्यात्मिक रश्मियों, रहस्यों व प्रतियों की अनभिज्ञता कहीं जा सकती है। शिवरात्रि के महानतम पर्व के साथ भी ऐसा हुआ लगता है।

पर्वतों की ऊंची चोटियों से लेकर सागर तक शायद ही कोई ऐसा स्थान होगा जहां परमात्मा शिव की मूर्ति की स्थापना न की गई हो। शायद ही कोई ऐसा धर्म ग्रंथ होगा जिसमें परमात्मा शिव की महिमा न की गई हो। परंतु परमात्मा शिव के असल परिचय, अवतरण व कर्तव्य अदि से मनुष्य अनभिज्ञ है। यदि मानव इन्हीं सच्चाईयों को जान ले कि परमात्मा शिव कौन, कब, कैसे प्रगट होते व क्या करते हैं तो सभी मनुष्य परमात्मा शिव पर अपना सब कुछ न्योछावर किए बिना नहीं रह सकते। इस शिवरात्रि पर्व से पूरे विश्व को एकता के सूत्र में पिरोया जा सकता है।

शिवरात्रि उस जमाने की यादगार है जबकि विश्व में चारों ओर अज्ञान अंधकार छाया हुआ था, भाई-भाई के खून का प्यासा था, स्त्रियों की लाज सुरक्षित नहीं थी। उस महाशिवरात्रि के समय मनुष्यता तड़प रही थी, रक्षक कोई नजर नहीं आता था, उस समय ब्रह्मलोक से एक अमर ज्योति का अवतरण हुआ था, उनके दिव्य प्रकाश से सारा जग-जगमगा उठा था। उस ज्योति का नाम 'परमात्मा शिव'। शिव का अर्थ है कल्याणकारी। सब मनुष्य के नाम देह पर आधारित होने के कारण विनाशी है और देह परिवर्तन के साथ ही उनके नाम भी बदल जाते हैं, परंतु परमात्मा अशरीरी है और जन्म मरण के चक्र में नहीं आते उनका नाम अविनाशी और दिव्य है, उनका रुप दिव्य ज्योतिबिंदु है इसलिए उनकी मूर्ति को ज्योतिर्लिंग अथवा शिवलिंग कहा जाता है। भारत के 12 मुख्य मंदिरों को इसी कारण ज्योतिर्लिंगम मठ भी कहते हैं।

भारतीय इतिहास, धार्मिक ग्रंथ और सारे देश के कोन-कोने में शिव की मूर्तियां मिलती है। उत्तर में अमरनाथ, हिमालय (गढवाल) में केदारनाथ, वाराणसी में विश्वनाथ, चित्रकूट में लिंगविजेंदर, प्रयाग में ब्रह्मोश्वर, उज्जैन में महाकालेश्वर, मध्यप्रदेश में दूसरा प्रसिद्ध मंदिर ओंकारनाथ, बिहार में बैजनाथ, गंगा-सागर के संगम पर संगमेश्वर, आसाम में भीमाशंकर, सौराष्ट्र में सोमनाथ और दक्षिण में रामेश्वर आदि। इस प्रकार जगह-जगह परमात्मा शिव की मान्यता का रूप ज्योतिरबिंदु शिव की याद दिलाते हैं। यह मंदिर देशवासियों में भावनात्मक एकता लाते और सारे भारत देश को शिव भूमि होने का संदेश देते हैं। न केवल भारत और हिंदू धर्म के लोग ही परमात्मा शिव को सम्मान देते हैं बल्कि

भारत के बाहर और दूसरे धर्म में विश्वास रखने वाले लोग भी शिव को बहुत मान देते रहें हैं। उदाहरण के तौर पर रोम में इसाई धर्म के कैथोलिक लोग गोल आकार वाले पत्थर को आज तक पूजते हैं। अरब में मक्का के तीर्थ स्थान पर मुस्लिम यात्री भी इसी प्रकार के पत्थर जिसे संग-ए-असवद या मक्केश्वर को चुमते हैं। जापान में रहने वाले बुद्ध धर्म के कई अनुयाई जब साधना के लिए बैठते हैं तो अपने सामने शिवलिंग की तरह का पत्थर 3 फुट की दूरी पर 3 फुट ऊंचे स्थान पर ध्यान लगाने के लिए रखते हैं। इसके अतिरिक्त मिस्र में ओसीरीस, बेबोलान में सीअन नाम से शिव की पूजा होती है जबकि सीरीया, यूनान स्पेन,जर्मनी, अमेरिका, मेक्सिको सुमात्रा एवं जावा द्विप आदि, विभिन्न स्थानों में भी परमात्मा शिव की ही यादगार देखने को मिलती है। यही नहीं बल्कि स्कॉटलैंड के प्रसिद्ध नगर ग्लासगो, तुर्कीस्थान ताशकद, वेस्ट-इंडीज, ग्याना, लंका, स्यामा, मारीशेस आदि में भी शिवलिंग की पूजा होती है। नेपाल में इसे पशुपतिनाथ तथा गुरु नानक देव जी द्वारा उसे एकोंकार कहा गया है। इन सबसे स्पष्ट है कि परमपिता शिव परमात्मा किसी एक धर्म के पूजनीय नहीं है बल्कि विश्व भर की सर्व आत्माओं के परम पूज्य पिता हैं।

परमात्मा शिव अजन्मा, अभोक्ता और ब्रह्मलोक वासी हैं। अजन्मा इसलिए कहा जाता है कि वह मानव व अन्य प्राणियों की तरह जन्म नहीं लेते जिससे कर्मबंधन बने। बल्कि धर्म ग्लानि के समय जब सारी मानव आत्माएं पांच विकारों के कारण दु:खी, अशांत, पतित व भ्रष्टाचारी बन जाती हैं, तो उन्हें पुन: पवित्र बनाने के लिए इस साकारी सृष्टि में एक साधारण वृद्ध तन में परकाया प्रवेश अथवा अवतरित होते हैं जिसे उनका दिव्य अलौकिक जन्म कहा जाता है। परमात्मा शिव के इसी दिव्य अवतरण की पावन स्मृति में ही शिवरात्रि अथवा शिवजयंती पर्व मनाया जाता है। यह केवल 10-12 घंटे की रात नहीं बल्कि यह अज्ञानता, पापाचार और बुराइयों की प्रतीक है। शिवरात्रि फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चौदवी अंधेरी रात में अमावस के पूर्व मनाई जाती है। फाल्गुन मास वर्ष के अंत का सूचक है और चौदवी रात घोर अंधकार की निशानी है।

शिवरात्रि के दिन भक्तगण शिवलिंग पर धतूरा, बेल, बेलपत्र इत्यादि चढ़ाते, रात्रि जागरण व व्रत रखते हैं। धतूरा विकार का, बेर नफरत का, बेलपत्र बुराइयों व व्यसनों का प्रतीक है जिन्हें ही परमात्मा शिव पर चढ़ाना चाहिए तथा आत्मा की ज्योति जगाने का जागरण व पवित्र रहने के लिए व्रत लेना चाहिए। शिवरात्रि सभी धर्मों का त्यौहार हैं तथा भारत वर्ष सभी धर्म के लोगों के लिए तीर्थ है। शिव स्मृति ही वास्तव में वह शुमंत्र अथवा तारक मंत्र है जिससे सर्व प्राप्तियां व सिद्धियां प्राप्त हो सकती है।

आज पुन: वह घडी़ है, वही दशा है, वही रात्रि है जब मानव समाज पतन की चरम सीमा तक पहुंच चुका है। ऐसे में बहुत ही महानतम घटना तथा संदेश सुनाते हर्ष हो रहा है कि अब कलयुग अंत व सतयुग आदि के संगमयुग पर स्वयंभू परमात्मा शिव मनुष्य आत्माओं की बुझी ज्योति को जगाने के लिए भारत में प्रजापिता ब्रह्मा के साकार तन में अवतरित हो चुके हैं तथा ईश्वरीय ज्ञान व राजयोग की शिक्षा देकर विकारों व बुराइयों से मुक्त कर दैवी स्वराज की स्थापना कर रहे हैं। इसलिए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा समूचे विश्व के 130 देशों में अपने 4000 से भी अधिक राजयोग केन्द्रों के माध्यम से महाशिवरात्रि का पावन पर्व बहुत धूमधाम से मनाया जा रहा है। आईए हम सभी अपने परमपिता परमात्मा शिव के इस दिव्य जन्म पर विकारों, व्यसनों व आपसी मतभेदों को त्याग विश्व शान्ति, सद्भावना, नैतिक, आध्यात्मिक चरित्र उत्थान करने की प्रतिज्ञा के रूप में मनायें ताकि मानवता सुख शान्ति सम्पन्न बन सके।